अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) वस्तु के सामान्य धर्म को जानना कहलाता है-
(क) ज्ञान (ख) दर्शन
(ग) चारित्र (घ) तप (ख)

(ii) काष्ट के स्तम्भ जैसा मान है-
(क) अनन्तानुबंधी (ख) अप्रत्याख्यानी
(ग) प्रत्याख्यानावरण (घ) संज्वलन (ग)

(iii) गृहीत कर्म पुद्गलों में भिन्न-भिन्न स्वभावों का होना है-
(क) प्रकृति बंध (ख) स्थिति बंध
(ग) अनुभाग बंध (घ) प्रदेश बंध (क)

(iv) वेदनीय कर्म कितने प्रकार से बंधता है-
(क) 10 (ख) 12
(ग) 22 (घ) 8 (ग)

(v) नामकर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितने कोड़ाकोडी सागरोपम है-
(क) 30 (ख) 33
(ग) 20 (घ) 70 (ग)

(vi) 'अकाम निर्जरा' किस आयु बंध का कारण है-
(क) नरक (ख) देव
(ग) तिर्यंच (घ) मनुष्य (ख)

(vii) किस कर्म के उदय से अमनोज्ञ स्वर प्राप्त होता है-
(क) अशुभ नामकर्म (ख) नीच गोत्र
(ग) असाता वेदनीय (घ) कर्म का उदय कारण नहीं (क)

(viii) कितने पर्याप्त देवता तीर्थंकर बन सकते हैं-
(क) 35 (ख) 38
(ग) 81 (घ) 99 (क)

(ix) 'स्थलचर' तिर्यंच पंचेन्द्रिय कौनसे नरक तक जा सकता है-
(क) दूसरी (ख) तीसरी
(ग) चौथी (घ) पाँचवीं (ग)

(x) सूक्ष्म संपराय गुणस्थान में उपयोग मिलते हैं-
(क) 5 (ख) 2
(ग) 6 (घ) 4 (घ)

(xi) तीसरा गुणस्थान कौनसे पंचेन्द्रिय में ही मिलता है-
(क) संज्ञी अपर्याप्त (ख) संज्ञी पर्याप्त
(ग) असंज्ञी अपर्याप्त (घ) असंज्ञी पर्याप्त (ख)

(xii) कर्म हैं-
(क) अष्टस्पर्शी रूपी (ख) चौस्पर्शी रूपी
(ग) अरूपी (घ) कभी रूपी, कभी अरूपी (ख)

(xiii) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है-
(क) अरूपी (ख) चौस्पर्शी
(ग) अष्ट स्पर्शी (घ) चौस्पर्शी-अष्टस्पर्शी दोनों (घ)

(xiv) बाटा बहती अवस्था में कितने उपयोग नहीं मिलते हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (घ)

(xv) नारकी से अधिकतम कितने उपयोग लेकर निकल सकते हैं-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 5 (घ) 3 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) ज्ञानी का उपकार नहीं मानने से ज्ञानावरणीय कर्म नहीं बन्धता है। (नहीं)

(ii) गोत्रकर्म की जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त की बन्धती है। (नहीं)

(iii) संज्वलन कषाय चारित्र नहीं आने देती है। (नहीं)

(iv) 'रति 'कषाय मोहनीय की प्रकृति है। (नहीं)

(v) आत्मा के अनन्त आत्म-सामर्थ्य गुण का कोई कर्म घात नहीं करता है। (नहीं)

(vi) जीव के रूपीपन का कारण गोत्रकर्म है। (नहीं)

(vii) जलचर सिर्फ सातवीं नरक में जाते हैं। (नहीं)

(viii) युगलिक सिर्फ देवगति से आते हैं। (नहीं)

(ix) छद्मस्थ साधु के कार्मण काय योग नहीं होता है। (हाँ)

(x) आहारक का योग अप्रमत्त साधु के ही होता है। (नहीं)

(xi) पुद्गल द्रव्य अरूपी नहीं होता है। (हाँ)

(xii) राग-द्वेष भावकर्म होने से रूपी माने गये हैं। (नहीं)

(xiii) सभी असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध चौस्पशी ही होते हैं। (हाँ)

(xiv) एकेन्द्रिय जीव अचक्षुदर्शन उपयोग लेकर ही निकलते हैं। (नहीं)

(xv) मनुष्य में अवधिज्ञान लेकर उत्पन्न भी हो सकते हैं और इसे लेकर वहाँ से निकल भी सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	निरोगी काया	(क) अपर्याप्त	साता वेदनीय
(ii)	मनोज्ञ स्वर	(ख) 517	शुभ नाम
(iii)	अन्तराय कर्म	(ग) सुभग	तीन हजार वर्ष
(iv)	गोत्र कर्म	(घ) अस्थिर	दो हजार वर्ष
(v)	पर्याप्त	(च) 276	अपर्याप्त
(vi)	दुर्भग	(छ) 535	सुभग
(vii)	स्थिर	(ज) 519	अस्थिर
(viii)	दुःस्वर	(झ) 553	सुस्वर
(ix)	भुजपरिसर्प की गति	(य) शुभ नाम	517
(x)	खेचर की गति	(र) 371	519
(xi)	माण्डलिक राजा	(ल) 563	535
(xii)	श्रावक	(व) दो हजार वर्ष	276
(xiii)	स्त्रीवेद	(क्ष) सुस्वर	371
(xiv)	पुरुष वेद	(त्र) तीन हजार वर्ष	563
(xv)	मिथ्यादृष्टि	(ज्ञ) साता वेदनीय	553

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i)	मेरे प्रभाव से जीव गति आदि विविध पर्यायों का अनुभव करता है।	नाम कर्म
(ii)	मैं ऐसा कर्म हूँ जो छह प्रकार से बंधता हूँ और नौ प्रकार से भोगा जाता हूँ।	दर्शनावरणीय
(iii)	विश्वास घात करने से मेरा बंध होता है।	तिर्यंचायु
(iv)	'सादि' मेरा एक प्रकार है।	संस्थान
(v)	ऐश्वर्य मद नहीं करने से मेरा बंध होता है।	ऊँच गोत्र
(vi)	मेरी आगति 108 की है।	केवली
(vii)	मेरी आगति 329 की तथा गति 395 की है।	नो गर्भज
(viii)	मेरी गति अमर है, मैं नियमा साधु बनता हूँ।	बलदेव
(ix)	हम ऐसे तिर्यंच हैं जो तिर्यंच गति में ही उत्पन्न होते हैं।	तेउकाय-वायुकाय
(x)	मैं तिर्यंच का भेद हूँ, जो काल करके अधिकतम तीसरी नरक तक उत्पन्न हो सकता हूँ।	खेचर
(xi)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें 10 योग मिलते हैं।	मिश्रगुणस्थान/ तीसरा गुणस्थान
(xii)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें जीव के 6 भेद मिलते हैं।	सास्वादन/ दूसरा गुणस्थान
(xiii)	मैं सतत अभ्यास से विस्तृत होने वाली बुद्धि हूँ।	कार्मिकी
(xiv)	मुझमें 7 उपयोग लेकर जीव आते हैं और 8 उपयोग लेकर निकलते हैं।	मनुष्य
(xv)	मुझमें 5 उपयोग लेकर जीव आते हैं और 5 उपयोग लेकर निकलते हैं।	5 अनुत्तर विमान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) आयु कर्म को समझने हेतु दृष्टान्त लिखिए।

उ. जैसे- जेल में कैदी न चाहते हुए भी रूक जाता है। यह कर्म आत्मा के अटल अवगाहना अथवा अमरत्व गुण को प्रकट नहीं होने देता है।

(ii) ज्योतिषी देवों की आगति एवं गति लिखिए।

उ. आगति 50 की- (15 कर्मभूमिज मनुष्य, 30 अकर्मभूमिज मनुष्य और 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इन सबके पर्याप्त)

गति-46 की- (15 कर्मभूमिज मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकाय, बादर अप्काय और बादर वनस्पतिकाय, इन 23 के अपर्याप्त और पर्याप्त)

(iii) 5 वें गुणस्थान में नहीं मिलने वाले योग लिखिए।

उ. आहारक, आहारक मिश्र और कार्मण काय योग।

(iv) छठे गुणस्थान में मिलने वाले उपयोग लिखिए।

उ. 4 ज्ञान- मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय ज्ञान
3 दर्शन- चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन

(v) पाँचों शरीर में कौनसे चतुस्पर्शी हैं तथा कौनसे अष्टस्पर्शी हैं।

उ. अष्टस्पर्शी-औदारिक, वैक्रिय, आहारक और तैजस
चतुस्पर्शी- कार्मण शरीर

(vi) 'अवाय' को परिभाषित कीजिए।

उ. ईहा से जाने हुए पदार्थों में निश्चयात्मक ज्ञान होना, अवाय कहलाता है। जैसे-यह रस्सी का ही स्पर्श है।

(vii) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में 5 उपयोग लेकर आते हैं, वे कौनसे हैं ?

उ. 2 ज्ञान (मति, श्रुत), 2 अज्ञान (मति, श्रुत), 1 अचक्षुदर्शन

(viii) पहली नारकी से 7 उपयोग लेकर निकलते हैं, वे कौनसे हैं ?

उ. 3 ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि), 2 अज्ञान (मति, श्रुत), 2 दर्शन (अचक्षु, अवधि)

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(i) वेदनीय कर्म तथा मोहनीय कर्म आत्मा के किन गुणों को प्रकट नहीं होने देते हैं ?

उ. वेदनीय कर्म- निराबाध गुण।
मोहनीय कर्म- क्षायिक समकित तथा अनन्त वीतरागता।

(ii) कोई 6 प्रत्येक प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. इनमें से कोई 6 मान्य- 1. अगुरुलघु, 2. उपघात, 3. पराघात, 4. उच्छ्वास, 5. आतप, 6. उद्योत, 7. निर्माण और 8. तीर्थंकर नाम।

(iii) ज्ञानावरणीय बंध के कोई 3 कारण लिखिए।

उ. नोट इनमें से कोई 3 मान्य- 1. ज्ञान और ज्ञानी का अवर्णवाद करे अथवा अवगुण निकाले।
2. ज्ञान और ज्ञानी की निन्दा करे व उनका उपकार न माने।
3. ज्ञान सीखने में अन्तराय देवे।
4. ज्ञान और ज्ञानी की आशातना करे।
5. ज्ञान व ज्ञानी से द्वेष करे।
6. ज्ञान व ज्ञानी से झूठा विषमवाद (झगड़ा) करें।

(iv) शुभ नामकर्म के उदय के कोई 6 प्रकार लिखिए।

उ. इनमे से कोई 6 मान्य- 1. इष्ट शब्द 2. इष्ट रूप 3. इष्ट गंध 4. इष्ट रस
5. इष्ट स्पर्श 6. इष्ट गति 7. इष्ट स्थिति 8. इष्ट लावण्य 9. इष्ट यशोकीर्ति
10. इष्ट उत्थान-कर्म-बल-वीर्य-पुरुषाकार पराक्रम 11. इष्ट स्वर 12. कान्त स्वर
13. प्रिय स्वर 14. मनोज्ञ स्वर।

(v) 15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति के 276 भेद लिखिए।

उ. 99 जाति के देवता, पहली से छठी तक ये छः नरक एवं 179 की लड़ में से तेउकाय, वायुकाय के 8 भेद छोड़कर 171 की, इस प्रकार 171+99+6 = 276

(vi) वासुदेव की आगति एवं गति समझाइए।

उ. आगति 32 की (35 वैमानिक में से 5 अनुत्तर विमान को छोड़कर 30 वैमानिक देवता एवं पहली, दूसरी नरक, इनके पर्याप्त) गति 14 की- (7 नरक के अपर्याप्त-पर्याप्त)

(vii) सम्यग्दृष्टि की गति के 282 भेद लिखिए।

उ 81 जाति के देवता, 15 कर्मभूमिज मनुष्य, 30 अकर्मभूमिज मनुष्य, 6 नरक (सातवीं नरक को छोड़कर) और 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इन 137 के अपर्याप्त और पर्याप्त त्र 274, पाँच असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय एवं तीन विकलेन्द्रिय, इन 8 के अपर्याप्त 274 + 8 = 282

(viii) समुच्चय जीव की आगति 371 को समझाइए।

उ 563 में से 7 नारकी, 86 युगलिक मनुष्य और 99 जाति के देवता, इन 192 के अपर्याप्त को छोड़कर।